RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

गोस्वामी तुलसीदास का साहित्यः वर्तमान परिपेक्ष्य

गीतांजलि कोलीवाल
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
लूणकरनसर, बीकानेर,
राजस्थान, भारत भारत

सारांश

गोस्वामी तुलसीदास ने हमारी भारतीय संस्कृति के उपयोगितापूर्ण व उज्ज्वल पक्षों को अत्यन्त प्रेरणास्पद रूप में व्यक्त किया है। उनका साहित्य रामभक्ति काव्यधारा को उत्कर्ष व गौरवशाली बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्तमान समय में हम जिस अनिश्चितता, अन्धकार, निराशा, अविश्वास, किंकर्तव्य विमूढ़ता आदि स्थितियों से गुजर रहे है उससे बाहर निकलने में हमे साहित्य की आवश्यकता महसूस होती है। ऐसे में हम तुलसीदास के साहित्य को अग्रिम पंक्ति में देखते हैं। तुलसीदास के प्रमाणिक ग्रंथों की प्रभावशीलता इनके साहित्य की सार्थकता को सिद्ध करती है। तुलसीदास के मानस व अन्य ग्रंथों में समन्वयता की भावना व्यक्त हुई है। तुलसी का मानस रामराज्य की श्रेष्ठ परिकल्पना है। तुलसीदास ने भविष्य दृष्टा के रूप में वर्तमान जीवन के संकटों का अनुमान अपने युग में ही लगा लिया था जिसकी अभिव्यक्ति उनके काव्य में मिलती है। वर्तमान युग की उपभोक्तावादी व पाश्चात्य संस्कृति प्रधान स्थिति को देखते हुए जिसमें भारतीय संस्कृति के प्रधान मूल्यों का ह्रास हो रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति में तुलसीदास का साहित्य अपनी उपयोगिता व अपनी प्रासंगिकता रखता है।

मुख्य शब्द : गौरवशाली, भविष्य दृष्टा, प्रासंगिकता, नैतिकता, आत्मीयता, किंकर्तव्य विमूढ़ता, महाकाव्य, खण्डकाव्य, लोकमंगलकारी, समन्वय भावना, शील, रामराज्य, लोकनायक, लोकतांत्रिक प्रणाली, भौतिकता, उपभोक्तावादी।

प्रस्तावना

गोस्वामी तुलसीदास भारत के लोकप्रिय कवि है। तुलसीदास हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्तिकालीन काव्यधारा के अन्तर्गत सगुण भक्ति में राम भक्ति काव्यधारा के प्रमुख व प्रतिनिधि कवि के रूप में प्रसिद्ध है। तुलसी का साहित्य राम भक्ति काव्य धारा को उत्कर्ष व गौरवशाली बनाने में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। तुलसीदास ने राम के प्रति जो भक्ति की है वह दास्य भाव की भक्ति सदैव स्मरणीय रहेगी। इसी के साथ उनका साहित्य अपनी उपयोगीता, अपनी महता, अपनी प्रभावषीलता की सदैव व्यक्त करता रहेगा।

वर्तमान में हमारे देश की, समाज की जो परिस्थितियाँ है उसमें भौतिकता का बाहुल्य है और हमारे देश की आस्था, आशा व विश्वास की मजबूत नींव को नष्ट करने वाली है। आज हम एक ऐसे चौराहे पर खड़े है जहाँ से सिर्फ अन्धकार, निराशा, अज्ञानता, किंकर्तव्यविमूढ़ता, अनिश्चतता की स्थिति नजर आती है। आज का मानव द्वंद्व व अनिश्चितता का जीवन जी रहा है। जहाँ उसके पास किसी के लिए भी समय नहीं है वह अपने आप से भी कटता जा रहा है। ऐसे समय में हम एक ऐसे साहित्य की आवश्यकता महसूस करते है जो हमे अनिश्चितता की ऐसी स्थिति से बाहर निकलने में हमारी सहायता करें व हमें आषा, ज्ञान, प्रकाश, निश्चितता, कर्त्तव्यपरायणता युक्त जीवन की और अग्रसर करें और ऐसी परिस्थिति में अपनी उपयोगिता सिद्ध कर सके। हम अग्रिम पंक्ति में गोस्वामी तुलसीदास के साहित्य को खड़ा पाते है।

तुलसीदास ने अपने काव्य में भारतीय संस्कृति के मूल्यों को उसके उज्ज्वल पक्षों को अत्यन्त प्रेरणास्पद रूप में प्रस्तुत किया है। इस प्रकार हम यह स्वीकार कर सकते है कि काव्य को आधार मानकर भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों, मूल्यों व तत्वों आदि को जानने में गोस्वामी तुलसीदास का साहित्य पूर्णतयः उपयुक्त है।

किसी भी रचनाकार की रचना प्रत्येक काल में यदि अपनी प्रभावशीलता सिद्ध करते हुए अपनी सार्थकता को सिद्ध करते हुए कालजयी बनती है तो उसकी उपयोगिता बनी रहती हैं। तुलसीदास का साहित्य भी इसी रूप में अपनी उपयोगिता व्यक्त करता है।

अध्ययन का उद्देश्य

गोस्वामी तुलसीदास रामभक्ति काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि, लोक–नायक, भारतीय संस्कृति के प्रेरक, संरक्षक, उच्च कोटी के साहित्यकार, भविष्य–दृष्टा, लोकदृष्टा, सामाजिक चेतना के अग्रदूत, सांस्कृतिक मूल्यों के पोषक व समन्वयकारी थे। तुलसीदास का साहित्य वर्तमान में अपनी उपयोगिता सिद्ध करता है। इनके साहित्य में भारतीय संस्कृति के आवश्यक तत्व नैतिकता, आषा, कर्त्तव्यपरायणता, लोकमंगल की भावना, आत्मीयता, समन्वय भावना मिलते है। हमारी वर्तमान भारतीय संस्कृति को इन्ही मूलभूत तत्वों की आवश्यकता है।

''गोस्वामी जी के रचे बारह ग्रंथ प्रसिद्ध हैं, जिनमें 5 बड़ेऔर 7 छोटे है। दोहावली, कवित्त रामायण, गीतावली, रामचरितमानस, विनयपत्रिका बड़े ग्रंथ है तथा रामलला नहछू, पार्वती मंगल, जानकी मंगल बरवै रामायण, वैराग्य संदीपनी और कृष्ण गीतावली, रामाज्ञा प्रश्नावली छोटे।''[1]

इन ग्रंथों की महिमा के आधार पर हम तुलसीदास के साहित्य की उपयोगिता व उनके साहित्य की सार्थकता को जान सकते है।

रामचरितमानस – महाकाव्य

तुलसीदास की कीर्ति का आधार स्तम्भ।

विनय पत्रिका – गीतिकाव्य

इसमें तुलसीदास ने कलिकाल के अत्याचारों से त्रस्त होकर अपनी दुःखभरी जीवन गाथा राम के दरबार में प्रस्तुत की है।

पार्वती मंगल – खण्ड काव्य

इसमें षिव – पार्वती के विवाह का वर्णन है।

जानकी मंगल – खण्ड काव्य

इसमें राम सीता के विवाह का वर्णन है।

रामलला नैहछू – खण्ड काव्य

इसमें राम के यज्ञोपवित संस्कार, विवाह आदि पर लोकगीत है।

कवितावली – इसमें कलियुग का वर्णन व तत्कालीन परिस्थितियों का चिताकर्षक प्रतिबिम्ब हैं। कवितावली में तुलसीदास ने जीवन व समाज के कटु सत्य को व्यक्त किया हैं व तत्कालीन समाज में व्याप्त गरीबी, भुखमरी, अकाल और महामारी की त्रासदी को अभिव्यक्त किया है।

''इन सभी रचनाओं में भाव वैविध्य गोस्वामी जी की सबसे बड़ी विशेषता है एक और तो उन्होंने नाथपंथियों के प्रभाव से नष्ट होती हुई जनमानस की विश्वासमयी रागात्मिका वृत्तियों को रामभक्ति के माध्यम से पुनः पल्लवित किया और दूसरी ओर रामकथा के विविध प्रसंगों के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक एव पारिवारिक जीवन के आदर्शो को जनता के सामने प्रस्तुत कर विश्रृंखलित हिंदू समाज को केंद्रित किया। उनकी भक्ति भावना कबीर आदि निर्गुण भक्तों की ज्ञान योगमयी भावना की भांति रहस्यमयी नहीं है। वह सीधी सरल एवं सहज साध्य है। उनके रामसृष्टि क कण–कण में व्याप्त हैं, वे सभी के लिए उसी प्रकार सुलभ हैं, जिस प्रकार अन्न और जलः।''[2]

तुलसीदास का युग संक्रमण काल का युग था। उस युग में दो संस्कृतियाँ हिन्दु व मुस्लिम संस्कृति आपस में टकरा रही थी और रोजगार के अवसर भी उपलब्ध नहीं थे। ऐसे में हम वर्तमान की लोकतांत्रिक प्रणाली व तुलसीदास के युग का तुलनात्मक अध्ययन करें तो ज्ञात होता है कि धर्म व जाति के अन्तर्गत रोजगार की जो समस्या उस समय बरकरा थी वह आज भी ज्यों की त्यों है। उदाहरण स्वरूप देखे तो–

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि,
बणिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।
जीविका विहीन लोग, सीद्धमान सोच बस,
कहैं एक एकन सौं, कहाँ जाइ का करी।।[3]

तुलसीदास के अनुसार वर्तमान में समाज में ऐसी स्थिति है कि किसान के पास खेती करने के लिए न तो जमीन है और न ही साधन है। लोग आर्थिक दृष्टि से इतने अधिक कमजोर हो गए हे कि भिखारियों की भीख भी नहीं दे सकते। व्यापारियों का व्यापार चौपट हो चुका है। लोगों की क्रयशक्ति समाप्त हो गई है। कोई किसी को नौकरी नहीं देता क्योंकि वह उसे वेतन नहीं दे सकता। ऐसे में धीरे–धीरे लोगों की जीविका के साधन समाप्त हो रहे है। उनके हृदय में हर समय यही चिंता रहती है कि ऐसी स्थिति में अब वे कहाँ जाए और क्या करें?

गोस्वामी तुलसीदास के काव्य में मानव जीवन के विभिन्न रूपों का चित्रण मिलताहैं इनके काव्य में मानव मन के विभिन्न भाव, स्तर व रूप देखने को मिलत है। ''मानव–प्रकृति के जितने अधिक रूपों के साथ गोस्वामी जी के हृदय का रागात्मक सामंजस्य हम देखते है, उतना अधिक हिंदी भाषा के और किसी कवि के हृदय का नहीं। यदि कहीं सौंदर्य है तो प्रफुल्लता, शक्ति हेतोप्रणति, शील है तो हर्ष पुलक, गुण है तो आदर, पाप है तो घृणा, अत्याचार है तो क्रोध, शोक है तो करूणा, आनन्दोत्सव है तो उल्लास, उपकार है तो कृतज्ञंता, महत्त्व है तो दीनता तुलसीदास के हृदय में बिंथ–प्रतिबिंब भाव से विद्यमान है।''[4]

जार्ज ग्रियर्सन के अनुसार – महात्माबुद्ध के बाद भारत के सबसे बड़े लोकनायक तुलसीदास थे। एक सच्चा लोकनायक वही कहलाता है जिसमें समन्वय की भावना है। वह समन्वय ज्ञान और भक्ति का, शक्ति, शील और सौन्दर्य का, सगुण और निर्गुण का, शैव और वैष्णव का, राजा और प्रजा का, नर और नारायण का आत्मपक्ष और लोकपक्ष का, सत्य, शिव और सुंदर का समन्वय होता है और लोकनायक वही होता है जो समन्वय करता है सबको साथ लेकर आगे बढ़ता है। तुलसीदास के साहित्य में यह समन्वय चेतना सम्पूर्ण रूप में व्यक्त हुई हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी कहा है कि – लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करें।

वर्तमान समय में समाज ऊँच–नीच, अमीर–गरीब, शोषक–षोषित, जैसे खण्डों में बटा हुआ है और ऐसी विषम परिस्थिति में तुलसी कृत रामचरितमानस जैसा साहित्य इन खण्डित तत्वों में एकता स्थापित करने वाला है। रामचरितमानस को माध्यम बनाकर लोकनायक तुलसीदास ने समाज के खण्डित मूल्यों, मर्यादाओं,

मान्यताओं व तत्वों में एकता स्थापित की है। तुलसीदास ने अपने साहित्य के माध्यम से विभिन्न विरोधी मतों, जीवन शैलियों में समन्वय कर भारतीय जनता को एक नया मार्ग दिया। तुलसीदास के मानस व अन्य ग्रंथों में समन्वयता की भावना व्यक्त होती है।

''रामचरितमानस का भाव–पक्ष जितना गंभीर है, उसकी शैली भी उतनी ही प्रौढ़ हैं सभी दृष्टिकोणों से इसमें काव्य–कला के महत रूप का दर्शन होता हैं जहाँ तक युग– धर्म और संदेश का सम्बन्ध है, यह ग्रन्थ समस्त उत्तरी भारत में एक पवित्र धर्म–ग्रंथ की भाँति आदृत होता रहा है। राष्ट्र की विभिन्न धार्मिक एव सामाजिक समस्याओं का समाधान इसमें आदर्शवादी एवं परम्परागत मान्यताओं के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।''[5]

तुलसीदास ने अपने रामचरितमानस महाकाव्य में रामराज्य की कल्पना करते हुए राम को एक आदर्श राजा के रूप में प्रस्तुत किया है जो प्रजा की भलाई में सदैव प्रयासरत रहते हैं। रामराज्य से तात्पर्य एक ऐसा राज्य जहाँ की प्रजा दैहिक, दैविक व भौतिक तापों से मुक्त हो। कोई भी ना दरिद्र हो और ना ही दीन हो, ना दुखी हो। राम राज का कानून, वहाँ की शासन पद्धति सभी प्रजा के हित में होते है। तुलसीदास ने रामराज्य की परिकल्पना को आधार मानकर लिखा है–

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी,
सोई नृप अवसि नरक अधिकारी।।[6]

तुलसीदास के कहने का अभिप्राय यह है कि जिस राजा के राज्य में प्रजा दुःखी रहती है, अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करती है। वह राजा निश्चित रूप से नरक का ही अधिकारी हैं।

तुलसीदास की यह पंक्तियाँ आज के शासन वर्ग को पूरे मनोयोग से पढ़ने और समझने की आवश्यकता है।

''रामचरित मानस में वैसे तो प्रायः सभी भावों एवं रसों की व्यंजना प्रसंगानुसार हुई हैं किंतु इसका अंगीरस या केंद्रीय भाव भक्ति ही है जिसे रस–सिद्धांत के अनुसार शांत रस कहा जा सकता है। इसी को पाश्चात्य सौन्दर्य शास्त्र की दृष्टि से 'उदात्त' या 'औदात्य' की संज्ञा दी जा सकती है। मानव का आधारभूत तत्व औदात्य ही है। जिसकी व्यंजना विभिन्न रूपों म हुई है।''[7]

राष्ट्र के निर्माण व भावात्मक एकता के लिए जिस उद्दात चरित्र की आवश्यकता महसूस होती है वह मानस में मिलता है। मानस आज करोड़ो, निराश, हताश, दुःखी, टूटे परेशान मनों को एकता का संदेश दे रहा हैं। यह ग्रंथ केवल भारत तक ही सीमित नहीं हैं। रामचरितमानस युगवाणी है। एक ऐसा विशिष्ट महाकाव्य है जो विष्व के धार्मिक–दार्शनिक, सामाजिक–राजनैतिक जीवन मूल्यों का आदर्श निरूपति करता है। भारतीय संस्कृति का संरक्षक बना है।

वर्तमान युग का भारत पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति का अनुकरण कर रहा है। भविष्य दृष्टा गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी दूरदर्शिता से भारतीय संस्कृति के गहन संकट का अपने युग में ही अनुमान लगा लिया था। विवेकपूर्ण दृष्टि वाले तुलसीदास ने अपनी कृति 'दोहावली' में इसे व्यक्त करते हुए लिखा है कि–

मनि भाजन मधु, पारई पूरन अमी निहारि।
का छाड़ियँ का संग्रहिय, कहहु बिबेक विचारि।।[3]

तुलसीदास कहते है कि मदिरा से भरे बर्तन तथा अमृत से भरे हुए मिट्टी के बर्तन में से किस का त्याग और किस को ग्रहण करना चाहिए यह चिन्तन मनन का विषय है। भाव यह है कि मणियुक्त बर्तन में शराब भरी हुई है फिर भी वह त्याज्य है और मिट्टी के बर्तन मे अमृत है तो वह अमृत होने के कारण ग्रहण करने योग्य हैं अर्थात चकाचौंध व उपयोगिता के सामने त्याग और संग्रह का चयन विवेकपूर्ण ही होना चाहिए।

आज की इस भौतिकता प्रधान संस्कृति में समस्त सुविधाओं के संग्रह के बावजूद भी मनुष्य विवेकपूर्ण चयन की स्थिति न होने के कारण समस्त सुविधाएँ होते हुए भी जीवन का वास्तविक आनन्द नहीं ले पा रहा।

समय की महता, उसका सदुपयोग व उपयोगिता तुलसीदास के साहित्य में अभिव्यक्त हुई है। तुलसीदास ने समय के प्रति निष्ठा को अपने साहित्य के माध्यम से व्यक्त करते हुए बताते हे कि यह जीवन की अपरिहार्य आवष्यकता हैं। आज की इस भागदौड़ की व्यस्तता भरी जिन्दगी में समय की कमी होती जा रही है। व्यक्ति के पास न तो स्वयं के लिए और न ही दूसरों के लिए समय हैं। समय का सदुपयोग करते हुए किसी भी कार्य को समय पर पूरा करना आज जीवन की सबसे बड़ी चुनौती बन गया हैं। यह हर व्यक्ति के बस की बात नही रही। तुलसीदास ने मध्यकाल में समय के महत्व को समझते हुए राम काव्य में इस चुनौती को साधने का सूत्र दिया है जो इस प्रकार है–

लाभ समय को पालिबो, हानि समय की चूक।
सदा बिचारहिं चारूमति सुदिन, कुदिन, दिन दूक।।[4]

अर्थात उचित समय पर कार्य करने से लाभ की प्राप्ति होती है जबकि समय निकल जाने के पश्चात केवल हानि ही हाथ लगती है क्योंकि समय तो अच्छा या बुरा दो दिन का होता है इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति सदैव इस बात का विचार करकर उचित समय पर कार्य पूर्ण करते है। इसके माध्यम से तुलसीदास जी यही कहना चाहते है कि सामर्थ्य रहते हमे उचित समय पर कार्य करना चाहिए।

निष्कर्ष

वर्तमान समय की परिस्थितियों व मानुषी प्रवृतियों को देखते है तो हम इस युग को पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति प्रधान और साथ ही उपभोक्तावादी संस्कृति से युक्त युग कह सकते है। ऐसा युग जिसमें आत्मीयता, नैतिकता, लोक–कल्याण, समन्वयात्मकता, एकता, मानवीय मूल्य, मर्यादा, मान्यताएँ आदि भारतीय संस्कृति के प्रधान मूल्यों का ह्रास हो रहा है। ऐसे विकट समय में गोस्वामी तुलसीदास का साहित्य अपनी उपयोगिता रखता है। रामचरिमानस जेसे महाकाव्य में तुलसीदास ने जिस तरह से मानवीय मूल्यां की प्रतिष्ठा की है वे आज के युग के मनुष्य द्वारा यदि अपना लिए जाए तो वर्तमान जीवन की यांत्रिकता से बचकर व निरन्तर ह्रास होते मानवीय मूल्यों को बचाकर वास्तविक जीवन का आनन्द लिया जा सकता है। तुलसीदास को गए कितने ही युग बीत गए परन्तु उनके साहित्य में उपलब्ध उनके विचार, उनके दृष्टिकोण को वर्तमान जीवन

में देखा जाए तो वर्तमान समय में उनकी उपयोगिता अवष्य सिद्ध होती है।

वस्तुतः तुलसीदास की विचारधारा आज भी अनुकरणीय है। उनका साहित्य कला की अमर देन है जिसका स्थायी व गहरा प्रभाव किसी क्षेत्र विशेष या काल विशेष तक ही सीमित नहीं है। बल्कि वह तो सर्वकालीन, सार्वभौमिक व सार्वजनिक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ. सं.105*
2. *हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.सं.176*
3. *कवितावली, तुलसीदास, रामचन्द्र शुक्ल, पृ.सं.97*
4. *गोस्वामी तुलसीदास, रामचंद्र शुक्ल, पृ.सं.85*
5. *हिंदीसाहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, गणपति चंद्रगुप्त, पृ.सं.224*
6. *रामचरितमानस : अयोध्या काण्ड, तुलसीदास, पृ.सं.30*
7. *हिंदीसाहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, गणपति चंद्रगुप्त, पृ.सं.223*
8. *दोहावली, तुलसीदास, पृ.सं.32*
9. *दोहावली, तुलसीदास, पृ.सं.43*